Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा

मत्ती ९:३५ से ११:१; मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६

खोदाई: प्रेरितों को क्या करने को कहा गया था? उनका संदेश क्या था? आपको क्या लगता है कि उनके मिशन में सामरी और अन्यजातियों को क्यों शामिल नहीं किया गया? बारहों को यीशु के तैयारी भाषण का मूल बिंदु क्या था? उन्हें (और हमें) किन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा? प्रत्येक समस्या पर उनकी प्रतिक्रिया कैसी थी? भेड़ियों के बीच भेड़ की तरह, साँपों की तरह चतुर, कबूतरों की तरह निर्दोष होने का क्या मतलब है? उन पर अत्याचार कौन करेगा? क्यों? उसका सत्य एक परिवार को कैसे विभाजित कर सकता है? येशुआ किस प्रकार की प्रतिबद्धता की मांग करता है? शिष्यों को उनके स्वागत का एहसास कैसे हुआ? प्रभु अपने प्रवचन के अंत और आरंभ में अपने दूतों को कौन सा पुष्टिकरण अधिकार प्रदान करते हैं?

चिंतन: आपने मसीह की पुकार का कैसे उत्तर दिया है? क्या आप दुनिया के विरोध और तिरस्कार के बावजूद उसके साथ अपनी पहचान बनाने को तैयार हैं? क्यों? क्यों नहीं? अपने प्रेरितों को यीशु की कौन सी शिक्षा आज आप अपने जीवन में लागू कर सकते हैं? किन परिस्थितियों में आपको अपने विश्वास के बारे में बात करना सबसे कठिन लगता है? मत्ती १०:३९ में विरोधाभास का आपके लिए क्या मतलब है? इस सप्ताह आप स्वयं को मसीह में कैसे खो सकते हैं?

नासरत से, यीशु एस्ड्रेलोन के आबादी वाले मैदान में उतरे और बारह लोगों के साथ गलील में अपना तीसरा और आखिरी मिशनरी अभियान शुरू किया, जो उस समय तक प्रभु के अपोस्टोलिक कॉलेज में अध्ययन कर रहे थे।

मसीह नासरत के आसपास के क्षेत्र के सभी कस्बों और गांवों से गुज़रे, उनके आराधनालयों में शिक्षा दी, राज्य की शुभ समाचार का प्रचार किया, जो कि वास्तविकता थी कि परमेश्वर का राज्य हाथ में था क्योंकि राजा मसीहा शारीरिक रूप से उनके बीच में थे। और उसने प्रत्येक रोग और बीमारी को व्यक्तिगत विश्वास के आधार पर ठीक किया (मत्ती ९:३५; मरकुस ६:६बी)। यह उनके मंत्रालय के इस बिंदु पर प्रदर्शित विभिन्न संकेतों और चमत्कारों का सारांश है।

जब मेशियाक ने भीड़ को देखा, तो उसे उन पर दया आई, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों के समान परेशान और असहाय थे (मत्तीयाहू ९:३६)। यद्यपि महासभा ने इस समय तक उसे अस्वीकार कर दिया था (देखें Eh– यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 2

अस्वीकार कर दिया गया है), अधिकांश लोगों ने ऐसा नहीं किया था। तो लोगों के बीच बहस चल रही थी, “क्या हमें नए चरवाहे का अनुसरण करना चाहिए, या पुराने चरवाहों का?” वे भ्रम की स्थिति में पड़कर बिना चरवाहे की भेड़ों के समान असहाय हो गए थे। जनता के भीतर वे शिष्य थे जो मसीह में विश्वास करते थे, और वह उनकी सेवा करते रहे।

लेकिन उस समय येशुआ ने जानबूझकर अपने मंत्रालय का ध्यान बारह शिष्यों, या शिक्षार्थियों तक सीमित कर दिया था जिन्होंने उसके आह्वान का जवाब दिया था। प्रभु जानते थे कि वह अंततः चले जाएंगे और स्वर्ग में अपने घर वापस चले जाएंगे (देखें Mr– यीशु का स्वर्गारोहण), इसलिए उन्होंने बारह यहूदी पुरुषों को प्रशिक्षित करने का इरादा किया, जो उनके पिता के पास वापस जाने के बाद आगे बढ़ेंगे। प्राचीन दुनिया में, यह कोई शिष्य नहीं था जो किसी विशेष रब्बी के लिए साइन अप करता था, बल्कि इसका उल्टा होता था। जब एक रब्बी एक होनहार छात्र को संभावित शिष्य या शिक्षार्थी के रूप में देखेगा, तभी रब्बी स्वयं कॉल जारी करेगा। जो लोग कॉल स्वीकार करते थे वे अपने रब्बी के साथ ठोस प्रशिक्षुता के समय में प्रवेश करेंगे।

इसे सीखने की यूनानी संरचना के अनुरूप नहीं बनाया गया था, जो मुख्य रूप से सूचना प्रसारित करने से संबंधित थी। सीखने का यहूदी मॉडल केवल जानकारी स्थानांतरित करना नहीं था, बल्कि जीवन का परिवर्तन करना था। यही कारण है कि शिष्य अपने रब्बी के साथ निकटता से रहता था – ताकि आध्यात्मिक पाठों को दैनिक जीवन में देखा और अनुभव किया जा सके, न कि केवल स्कूल के ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाए। रब्बियों ने सिखाया, “तुम्हारा घर रब्बियों के लिए सभा का स्थान हो और अपने आप को उनके पैरों की धूल में ढँक लो और प्यासे होकर उनके शब्दों का पीओ” (ट्रैक्टेट पिर्के एवोट १:४)। आदर्श शिष्य अपने रब्बी का इतनी बारीकी से अनुसरण करते थे कि जब वे साथ चलते थे तो उसकी धूल उनके ऊपर उड़ जाती थी। उनका मानना था कि उन्हें न तो उससे बहुत आगे होना चाहिए और न ही बहुत पीछे।

तब मसीहा ने अपने प्रेरितों से कहा: फसल तो बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं (मत्ती ९:३७)। वह यहां चरवाहे से लेकर कटाई तक के रूपक को बदल देता है। यीशु जो सिद्धांत सिखा रहे हैं वह यह है कि जो लोग कार्यकर्ताओं के लिए प्रार्थना करते हैं वे भी कार्यकर्ता बन जायेंगे; जो लोग फसल के लिए प्रार्थना करते हैं, वे फसल के लिए बीज भी बिखेर सकते हैं। रब्बी टैफ़ोन ने कहा, “दिन छोटा है और बहुत काम है, और काम करने वाले ज़मीन पर हैं, क्योंकि इनाम बहुत बड़ा है और घर का मालिक आग्रहपूर्ण है” (ट्रैक्टेट एवोट)।

इसलिए, फसल के ईश्वर से अपने फसल क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को भेजने के लिए कहें (मत्तीयाहू ९:३८)। यह मसीह की उपाधि है जो न्यायाधीश के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाती है। फ़सल का प्रभु उन लोगों का न्यायाधीश है जिन्हें बचाया नहीं गया है जो अंतिम दिन में उसके सामने खड़े होंगे और उन्हें नरक की निंदा की जाएगी

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 3

(प्रकाशितवाक्य पर मेरी टिप्पणी देखें Fo– महान श्वेत सिंहासन निर्णय)। नतीजतन, हमें उनसे आग्रह करना है कि वे उन्हें प्यार से चेतावनी देने के लिए कार्यकर्ता भेजें, ताकि वे अनन्त महिमा के लिए तैयार किए गए लोगों का हिस्सा बन सकें।



उसने अपने बारह प्रेरितों को अपने पास
बुलाया और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए अपने राजदूतों के रूप में दो-दो करके भेजा। उसने उन्हें बुरी आत्माओं को निकालने और इस्राएल के विश्वासी बचे हुए लोगों के बीच हर बीमारी और बीमारी को ठीक करने का अधिकार दिया (मत्ती १०:१; मरकुस ६:७; लूका ९:१-२)। तथ्य यह है कि येशुआ ने बारह लोगों को चुना यह कोई संयोग नहीं है, क्योंकि यह इज़राइल के बड़े समुदाय और बारह जनजातियों के समानांतर है। इस विशेष आयोग में हमें तीन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सबसे पहले, उसने उन्हें दो-दो करके भेजा (मरकुस ६:७)। दूसरे, यीशु ने उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए भेजा, सुसमाचार का नहीं (लूका ९:२)। प्रभु के पुनरुत्थान के बाद तक शुभ समाचार घोषित नहीं किया जा सका क्योंकि अनुग्रह की व्यवस्था उनके लिए एक रहस्य थी (इफि ३:३-९ और कुलु २:२)। तीसरा, उसने उन्हें प्रत्यायोजित अधिकार दिया (मत्ती १०:१)। यह महत्वपूर्ण होगा कि शिष्यों के संदेश की वैधता की पुष्टि करने के लिए ईश्वर की शक्ति प्रकट हो।

ये बारह दूतों के नाम हैं (मत्ती १०:२ए सीजेबी)। शिष्यों को दूत भी कहा जाता है (हिब्रू: श्लिचिम), जिसका अर्थ है एक फोकस या उद्देश्य के साथ भेजा गया। हालाँकि बहुत से लोग इस शब्द के ग्रीक अनुवाद (एपोस्टोलोई) से अधिक परिचित हैं। यहूदी दुनिया में, ऐसा कहा जाता है कि दूत (शलियाच), या प्रेरित वास्तव में स्वयं प्रेषक के बराबर होता है (ट्रैक्टेट बर्चोट ३४)। दूसरे शब्दों में, शालियाच/प्रेरित को यूं ही नहीं भेजा जाता था, बल्कि वास्तव में उसे भेजने वाले का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि माना जाता था। ऐसे व्यक्ति के पास प्रेरित का अधिकार होता है। इस प्रकार, शलियाच/प्रेरित शब्द बहुत मजबूत है और इस संदर्भ में यह दर्शाता है कि येशुआ उन बारह यहूदी पुरुषों को अपने प्रत्यक्ष प्रतिनिधि के रूप में नामित कर रहा था। प्रेरित शब्द एक बहुत ही सशक्त शब्द है जिसका उपयोग यीशु के बारह निकटतम अनुयायियों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। इसलिए, मैं इस टिप्पणी में प्रेरितों और शिष्यों के बीच अंतर करता हूं। बारहों को प्रेरित कहा जाएगा, और अन्य जो उस पर विश्वास करेंगे उन्हें शिष्य कहा जाएगा। हालाँकि यह सच है कि

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 4

प्रेरित भी शिष्य थे, यह सच नहीं है कि सभी शिष्य प्रेरित थे।

पहला, शमौन (जो पतरस कहलाता है), और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; फिलिप और बार्थोलोम्यू; थॉमस और मत्ती कर संग्रहकर्ता; हलफ़ई का पुत्र याकूब, और तद्दै; शमौन जेलोतेस और इस्करियोती यहूदा, जिन्होंने उसे धोखा दिया (मत्तीयाहू १०:२बी-४; साथ में देखें Cy– ये बारह प्रेरितों के नाम हैं)। जैसे-जैसे हम मसीह के जीवन के माध्यम से आगे बढ़ेंगे, हम इन चुने हुए प्रत्येक प्रेरित के व्यक्तित्व और मूल्यों के बारे में बहुत कुछ सीखेंगे।

इन बारह यीशु ने कुछ व्यावहारिक निर्देशों के साथ भेजा। यह कुछ पाठकों को आश्चर्यचकित कर सकता है कि उसने सबसे पहले उन्हें गोयिम के क्षेत्र से बचने के लिए कहा था। यीशु ने कहा: अन्यजातियों के बीच में न जाओ, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करो (मत्ती १०:५)। सुसमाचार से हम जानते हैं कि सामरियों को न केवल अन्यजातियों और अजनबियों (युहन्ना ४:९) के साथ दर्जा दिया गया था, बल्कि उनका नाम ही निंदा करने वाला था (युहन्ना ८:४८)।

बल्कि, उन्हें इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास जाना था (मत्तीयाहू १०:६)। यह उनके अधिकार का संदर्भ था। बाद में, पुनरुत्थान के बाद यीशु सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाने के लिए महान आयोग जारी करेंगे (उत्पत्ति १२:१-३; मत्ती २८:१८-२०)।

ऐसा नहीं है कि येशुआ सभी अन्यजातियों के साथ साझा करने के आह्वान की उपेक्षा कर रहा था, लेकिन यह समझ में आया कि पहली प्राथमिकता उन लोगों के साथ राज्य की शुभ समाचार साझा करना होगी जो इसके लिए उम्मीद से इंतजार कर रहे हैं। वह समय आएगा जब संदेश सभी राष्ट्रों तक जाएगा, लेकिन जब बारहों को भेजा गया तो उनकी प्राथमिकता इसराइल के अनुबंधित लोगों के साथ संदेश साझा करना था कि यहोवा ने एक मुक्तिदाता भेजने का अपना वादा पूरा किया था (निर्गमन पर मेरी टिप्पणी देखें Bz– मोचन)। इसी तरह, यीशु के पिता के पास वापस आ जाने के बाद, टार्सस के रब्बी शाऊल ने अभी भी इस सिद्धांत को कायम रखा, भले ही प्रेरित को अन्यजातियों के लिए नियुक्त किया गया था (रोमियों १:१६)।

जैसे ही वे गए, उन्हें इस संदेश का प्रचार करना था क्योंकि वे इसे जानते थे: स्वर्ग का राज्य निकट है (मत्तीयाहू १०:७)। उन्हें चमत्कारों के माध्यम से अपने संदेश को प्रमाणित करना था। उन्हें बीमारों को ठीक करना था, मृतकों को जीवित करना था, कोढ़ियों को शुद्ध करना था और दुष्टात्माओं को निकालना था। उन्होंने मुफ़्त में लिया था, उन्हें मुफ़्त में देना था (मत्ती १०:८)। रब्बी यहूदा ने राव के नाम पर कहा: पवित्रशास्त्र कहता है, ”देख, मैं ने तुझे मूरतें और न्याय की शिक्षा दी है (व्यवस्थाविवरण ४:५)। जैसे मैं मुफ्त में पढ़ाता हूं, वैसे ही आपको भी मुफ्त में पढ़ाना चाहिए” (ट्रैक्टेट बेचरोट २९ए)।

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 5

प्रेरितों को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से चिंतित नहीं होना था। उनके लिए ये सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी. उन्हें हल्के रंग की यात्रा करनी थी, सैंडल पहनना था और अंगरखा रखना था, लेकिन अपनी बेल्ट में सोना, चांदी या तांबा नहीं ले जाना था; उन्हें यात्रा के लिए कोई थैला, या रोटी, या अतिरिक्त अंगरखा, या अतिरिक्त जूते, या अतिरिक्त लाठी नहीं लेनी थी; क्योंकि मजदूर अपनी रखवाली के योग्य है (मत्ती १०:९-१०; मरकुस ६:९; लूका ९:३)। मरकुस ने दर्ज किया कि बारह लोग अपने साथ एक लाठी ले जा सकते थे (मरकुस ६:८)। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मत्तित्याहू और लूका का खंडन करता है। लेकिन समस्या का समाधान यह देखने से हुआ कि मत्ती ने कहा कि उन्हें कोई अतिरिक्त वस्तु नहीं लेनी है, लेकिन मरकुस ने लिखा है कि वे अपने मिशन पर प्रस्थान करने से पहले से ही कोई भी लाठी ले सकते हैं।

प्रेरितों को द्वितीयक चिंताओं से विचलित हुए बिना पूरी तरह से राज्य की शुभ समाचार पर ध्यान केंद्रित करना था। तल्मूड में एक समान बिंदु बनाया गया है जब यह कहा गया है कि कोई व्यक्ति कर्मचारी या अपनी सैंडल या अपने सोने या चांदी या अपने पैरों पर धूल के साथ टेंपल माउंट में प्रवेश नहीं कर सकता है जैसे कि व्यापार या खुशी के लिए (ट्रैक्टेट बेरोचोट ९:५). शायद इसी कारण से यीशु ने वास्तविक मंदिर की सेवा में लगे रहने के दौरान उन्हीं अध्यादेशों को शिष्यों में स्थानांतरित कर दिया था (यूहन्ना १:१४)। प्रेरितों का यह पहला सार्वजनिक मंत्रालय कई व्यावहारिक तरीकों से विश्वास-निर्माण का समय था, इसलिए उन्हें भरोसा था कि परमेश्वर उन लोगों से उनकी ज़रूरतें पूरी करेंगे जो उनके मंत्रालय के प्रति ग्रहणशील होंगे।

शिष्यों को विश्वास करने वाले अवशेष के सदस्यों की तलाश करनी थी। आप जिस भी शहर या गांव में प्रवेश करें, वहां किसी भरोसेमंद व्यक्ति की तलाश करें और वहां से निकलने तक उसी के घर पर रुकें। जैसे ही आप घर में प्रवेश करें, शालोम कहकर अभिवादन करें। यदि घर योग्य है, तो अपना शालोम उस पर टिका रहने दो; यदि नहीं तो तुम्हारा शालोम तुम्हारे पास लौट आए (मत्ती १०:११-१३; मरकुस ६:१०; लूका ९:४)। परमेश्वर का सुसमाचार पूरी दुनिया को दिया गया है, और इसमें पूरी दुनिया को बचाने की शक्ति है, लेकिन यह एक भी व्यक्ति को बचाने या मदद करने में शक्तिहीन है जिसके पास प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में येशुआ हा-मेशियाच नहीं होगा (यूहन्ना ५:४०) . जनता की बजाय व्यक्ति विशेष पर जोर दिया गया। उन्हें जनता को उपदेश नहीं देना था क्योंकि मसीह की अस्वीकृति के साथ वह समय बीत चुका था (देखें En– मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)।

प्रेरितों को पहले ही आगाह कर दिया गया था कि उनके संदेश को हर कोई अच्छी तरह से स्वीकार नहीं कर पाएगा। रब्बियों ने सिखाया कि फ़िलिस्तीन न केवल पवित्र था, बल्कि अन्य सभी देशों को छोड़कर, यह एकमात्र पवित्र भूमि थी। लेकिन भूमि के बाहर सब कुछ अंधकार और मृत्यु था। अन्यजातियों के देश की धूल ही अशुद्ध थी और संपर्क के कारण अपवित्र हो गई थी। इसे कब्र की तरह, या मौत की सड़ांध की तरह माना जाता

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 6

था। यदि फ़िलिस्तीन में बुतपरस्त धूल का एक धब्बा लाया गया था, तो वह भूमि के साथ मिश्रित नहीं हो सका और न ही हो सका, लेकिन अंत तक वही बना रहा जो वह था – अशुद्ध, अपवित्र, और जो कुछ भी उसने छुआ उसे अपवित्र कर दिया। यह हमारे प्रभु के उनके शिष्यों को दिए गए प्रतीकात्मक निर्देशों पर प्रकाश डालता है: यदि कोई आपका स्वागत नहीं करेगा या आपकी बातें नहीं सुनेगा, तो उनके खिलाफ गवाही के रूप में, उस घर या शहर को छोड़ते समय अपने पैरों की धूल झाड़ लें, और जहां उनके हैं वहां जाएं। मंत्रालय अधिक फलदायी होगा (मत्तीयाहु १०:१४; मरकुस ६:११; लूका ९:५)। दूसरे शब्दों में, उन्हें न केवल ऐसे शहर या घर को छोड़ना था, बल्कि उन्हें बुतपरस्त माना जाना था और उनके साथ व्यवहार किया जाना था। यहां उन लोगों पर जोर दिया गया है जो योग्य नहीं थे।

लेकिन सदोम के लोगों द्वारा उनके समय में अस्वीकृति जितनी बुरी थी, प्रेरितों से राज्य के शुभ समाचार के संदेश की अस्वीकृति उससे भी बदतर भाग्य लेकर आएगी। मैं तुम से सच कहता हूं, न्याय के दिन उस नगर की अपेक्षा सदोम और अमोरा के लिये जो अपनी दुष्टता के कारण नाश किए गए थे, अधिक सहने योग्य होगा (मत्ती १०:१५)। यह अंतिम फैसले में सजा की विभिन्न डिग्री के साथ उन पर आने वाले फैसले के दिन का संकेत था।

प्रेरितों को भोला नहीं बनना था। यीशु ने उन्हें चेतावनी दी: मैं तुम्हें भेड़ों की तरह भेड़ियों के बीच भेज रहा हूं (मत्ती १०:१६ए)। भेड़ें शायद सभी पालतू जानवरों में सबसे अधिक आश्रित, असहाय और मूर्ख हैं। फ़िलिस्तीन के लोग भेड़ों के स्वभाव और भेड़ियों के ख़तरे को समझते थे। यहां, येशुआ ने ईश्वर से नफरत करने वाली दुनिया द्वारा अस्वीकृति और उत्पीड़न की एक ग्राफिक तस्वीर दी जिसका सामना उन्हें उसके कारण करना पड़ेगा। इसलिए उनके बाहर जाने से पहले, उसने उनके सामने शिष्यत्व का पालन करने की कीमत रखी। जैसे वह विरोध और उत्पीड़न से नहीं बच पाया, वैसे ही वे भी नहीं बच पाए (यूहन्ना १५:१८-२७)।

इसलिए, साँपों के समान चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो (मत्ती १०:१६बी एनएएसबी)। मिस्र के चित्रलिपि में, साथ ही बहुत प्राचीन लोककथाओं में, साँप ज्ञान का प्रतीक थे। वे चतुर, होशियार, चालाक और सतर्क माने जाते थे। उस गुण में, कम से कम, विश्वासियों को साँपों का अनुकरण करना चाहिए (कुलुस्सियों ४:५)। मूल विचार यह है कि सही समय पर सही बात कहें, उचितता की भावना रखें, और प्रभु की महिमा करने के लिए सही परिणाम प्राप्त करने के सर्वोत्तम साधनों की खोज करने का प्रयास करें।

इसलिए, उन्हें लगातार मेहनती रहने की जरूरत थी। मनुष्यों से सावधान रहो; वे तुम्हें स्थानीय परिषदों को सौंप देंगे और तुम्हें उनके [छोटे] महासभा में कोड़े मारेंगे (Lg– महान महासभा देखें)। व्यापक उत्पीड़न होगा. यहां यीशु निकट भविष्यसूचक भविष्य की ओर बढ़ते हैं क्योंकि वे उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 7

बाद तक अन्यजातियों को गवाही नहीं देंगे। मेरे कारण तुम हाकिमों और राजाओं के साम्हने उन पर और अन्यजातियोंपर गवाह होकर पहुंचाए जाओगे। वे भविष्य के उत्पीड़न विश्वास का अभ्यास करने और विश्वास प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करेंगे। लेकिन जब वे तुम्हें गिरफ्तार करें तो हर स्थिति में क्या कहना है या कैसे कहना है, इसकी चिंता मत करो। उस समय तुम्हें बता दिया जाएगा कि क्या कहना है, क्योंकि तुम [सिर्फ] नहीं बोलोगे, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा बोलेगा (मत्तीयाहु १०:१७-२०)। सुसमाचार वृत्तांतों के बाद के अध्याय, साथ ही प्रेरितों की पुस्तक का इतिहास, इनमें से कुछ स्थितियों की पुष्टि करते हैं।

अनुमान है कि विरोध इतना तीव्र हो जाएगा कि करीबी परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे से अलग हो जाएंगे। भाई भाई को, और पिता अपने बेटे को पकड़वाकर घात करेगा; बच्चे अपने माता-पिता के विरुद्ध विद्रोह करेंगे और परिणामस्वरूप, उन्हें अपने ही बच्चों को मौत के घाट उतारना होगा। विश्वास करने वाले बचे हुए लोगों को छोड़कर, सभी मनुष्य मेरे कारण तुमसे घृणा करेंगे। फिर भी, यीशु का वादा यह है कि जो कोई अंत तक धीरज धरेगा, या दृढ़ रहेगा, उसे बचाया जाएगा (मत्ती १०:२१-२२)। इसका मतलब सभी मामलों में भौतिक मुक्ति की गारंटी नहीं हो सकता है, लेकिन आध्यात्मिक मुक्ति प्रभु में सभी विश्वासियों के लिए अंतिम वादा है – चाहे वर्तमान युग में कुछ भी हो। इस वादे की शर्त शाश्वत सुरक्षा है (देखें एम्एस – विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा)। ऐसा नहीं है कि ऐसा धीरज शाश्वत सुरक्षा अर्जित करेगा, बल्कि विश्वास में दृढ़ रहने से मसीहा के साथ पहले से मौजूद आध्यात्मिक संबंध की वास्तविकता की पुष्टि होगी।

जब एक स्थान पर तुम पर अत्याचार हो, तो दूसरे स्थान पर भाग जाओ। मैं तुम से सच कहता हूं, मनुष्य के पुत्र के आने से पहिले तुम इस्राएल के नगरों में घूमना पूरा न करोगे। (मत्ती १०:२३) प्रेरित मानव लेखक मत्तित्याहू ने ये शब्द यीशु द्वारा कहे जाने के कुछ दशकों बाद लिखे और निश्चित रूप से महसूस किया कि वे पूरे नहीं हुए थे। विल नॉट फिनिश (ग्रीक: टेलीओ) के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है समाप्त करना या पूरा करना। इसलिए, उस दिन तक इस्राएल राष्ट्र को शुभ समाचार लगातार प्रस्तुत करने की आवश्यकता होगी जब महान क्लेश के अंत में सभी इस्राएल को बचा लिया जाएगा (रोमियों ११:२५-२७) (मेरी टिप्पणी देखें प्रकाशितवाक्य ईवि – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार)।

यीशु ने उन्हें चेतावनी दी है कि वे उसी आधार पर अस्वीकार किए जाने की उम्मीद करें जिस आधार पर उसे अस्वीकार किया गया था, दुष्टात्मा के कब्जे के आधार पर। एक छात्र शिक्षक से बड़ा नहीं है, न ही एक सेवक अपने स्वामी से बड़ा है। येशुआ सकारात्मक आशीर्वाद का जीवन जिएगा, फिर भी महत्वपूर्ण विरोध के साथ। साधारण वास्तविकता यह है कि उनके अनुयायी, हाँ, आज भी, किसी भिन्न प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं कर सकते। छात्रों के लिए अपने शिक्षकों की तरह और नौकरों के लिए अपने स्वामी की तरह बनना ही काफी है। यदि घर के मुखिया को बील्ज़ेबब कहा गया है

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 8

(देखें ईके- केवल राक्षसों के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा ही यह बंदा राक्षसों को बाहर निकालता है), तो उसके घर के सदस्यों को कितना अधिक कहा जाएगा (मत्ती १०:२४-२५)। हल्के से लेकर भारी तक, यह विशिष्ट यहूदी तर्क है। यहाँ मुद्दा यह है कि यीशु के प्रेरित भोलेपन से विश्वास नहीं कर सकते थे कि उन्हीं लोगों द्वारा उनका स्वागत किया जाएगा जिन्होंने उनके रब्बी को इतनी दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया था।

फिर भी, प्रेरितों को उनसे डरना नहीं था, बल्कि यह समझना था कि सत्य की जीत होगी। उत्पीड़न के बावजूद उन्हें अभी भी स्वर्ग के राज्य के संदेश का प्रचार करना था। दोनों विरोधी (दूसरा कुरिन्थियों ११:१४) और संसार (प्रथम यूहन्ना २:१५-१७) भ्रम और धोखे में अत्यधिक सफल हैं। वे पाप को अच्छे उद्देश्यों और सहायक लाभों से ढककर उसके लिए एक प्रभावशाली और ठोस मामला बना सकते हैं। परन्तु प्रभु ने निर्णय दिया है कि ऐसा कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट न किया जाएगा या छिपा हुआ नहीं है जो प्रकट न किया जाएगा (मत्तीयाहु १०:२६)। शैतान और संसार की दुष्टता ज्यों की त्यों दिखाई जाएगी, और विश्वासियों की धार्मिकता ज्यों की त्यों दिखाई जाएगी। यहोवा ने अपने बच्चों को न्याय दिलाने का वादा किया है।

जो कुछ समय तक छिपा रहा वह अंततः प्रकट होना ही चाहिए। जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूं, उसे दिन के उजाले में कहो; जो कुछ तुम कान में फुसफुसाते हो, छत पर से प्रचार करो (मत्ती १०:२७)। शुभ समाचार का प्रकाश एक कटोरे के नीचे रखने के लिए नहीं है (देखें डीएफ – आप पृथ्वी के नमक और दुनिया की रोशनी हैं), हालांकि यह कुछ लोगों के लिए अपमानजनक हो सकता है। भले ही कुछ समय के लिए यीशु की अपने शिष्यों को शिक्षा अंधेरे में, या, जैसे कि, उनके कानों में होनी चाहिए। . . राज्यपालों और राजाओं के सामने गवाही के आने वाले समय में (मत्ती १०:१७), और दुनिया भर में सुसमाचार की घोषणा (मती २४:१७) इसे अब छिपाया नहीं जाना चाहिए। फ़िलिस्तीनी घरों की सपाट छतें शाम के समय सामाजिक संपर्क के स्थान थीं जहाँ सुसमाचार साझा किया जा सकता था।

उन लोगों से मत डरो जो शरीर को तो मार देते हैं परन्तु आत्मा को नहीं मार सकते। बल्कि उस से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है (मत्ती १०:२८)। इसका प्रेरितों या हमसे क्या लेना-देना है? यदि आप बचाए गए हैं, तो इससे आपको आनन्दित होना चाहिए। आपको बचा लिया गया है. नरक की ओर एक नज़र विश्वासी को आनंद की ओर ले जाती है। लेकिन यह हमें खोए हुए तक पहुंचने के अपने प्रयासों को तेज करने के लिए भी प्रेरित करता है। नरक की वास्तविकता को समझने के लिए अधिक ईमानदारी से प्रार्थना करना और अधिक लगन से सेवा करना है।

क्या एक पैसे में दो गौरैया नहीं बिकतीं? तौभी उनमें से एक भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना भूमि पर न गिरेगा। हमारे बारे में परमेश्वर का ज्ञान इतना विस्तृत है और उसकी रुचि इतनी गहरी है कि आपके सिर के सभी बाल भी गिने हुए हैं। तो डरो मत;

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 9

तुम बहुत सी गौरैयों से अधिक मूल्यवान हो (मत्तीयाहु १०:२९-३१)। स्पष्ट ख़ामोशी दर्शाती है कि यहोवा के बच्चे उसे कितने प्रिय हैं। इसी तरह के वादे में येशुआ ने कहा: यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज यहां है, और कल आग में झोंकी जाएगी, इसी रीति से वस्त्र पहिनाता है, तो क्या वह तुम्हें, हे अल्पविश्वासियों, को और अधिक न पहिनाएगा (मत्ती ६:३०)। तो फिर हम अपने स्वर्गीय पिता द्वारा ऐसी देखभाल और सुरक्षा के बारे में जानकर चिंतित और भयभीत कैसे हो सकते हैं?

सर्वोपरि सिद्धांत यह है: जो कोई दूसरों से पहले मुझे स्वीकार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने स्वीकार करूंगा। परन्तु जो कोई दूसरों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा, मैं अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने अपना इन्कार करूंगा। (मत्ती १०:३२-३३) एक बार फिर, ध्यान जनता के बजाय व्यक्ति पर है। क्या हम यहोवा और येशुआ के साथ खड़े होने को तैयार हैं, भले ही वह हमारे आसपास के लोगों के बीच अलोकप्रिय हो? निहितार्थ बहुत बड़े हैं, क्योंकि यदि यीशु इसराइल के ईश्वर द्वारा भेजा गया सच्चा मसीहा है, और फिर उसे अस्वीकार करना, संक्षेप में, ईश्वर को अस्वीकार करना है।

यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार करने के परिणामस्वरूप, यहूदी घर में विभाजन होगा। यह मत समझो कि मैं देश में शांति लाने आया हूँ। मैं मेल कराने नहीं, परन्तु तलवार लाने आया हूं (मत्ती १०:३४)। शांति के बदले उन्हें रोमन तलवार मिलेगी। जैसे ही यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया गया, यरूशलेम और मंदिर विनाश के लिए नियत थे (यशायाह 8 देखें)। इस्राएल के लिए शांति होती यदि उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया होता। लेकिन एकता की जगह विभाजन होगा. क्योंकि मैं बेटे को उसके पिता के, और बेटी को उसकी मां के, और बहू को उसकी सास के खिलाफ करने आया हूं। मनुष्य के शत्रु उसके ही घर के सदस्य होंगे (मत्ती १०:३४-३७)। तल्मूड मीका ७:६ को मसीहाई समय पर भी लागू करता है। क्योंकि बेटा अपने पिता का अपमान करता है, बेटी अपनी मां के विरूद्ध उठती है, बहू अपनी सास के विरूद्ध उठती है – एक व्यक्ति के शत्रु उसके अपने घर के सदस्य होते हैं (मीका ७:६)। यह परिच्छेद लूका १:१७ के लिए भी प्रासंगिक है, और मलाकी ४:६, जो पिताओं के हृदयों को बच्चों की ओर मोड़ता है, उद्धृत किया गया है।

यीशु स्वीकृति या अस्वीकृति का प्रतीक होंगे। शिष्यत्व का अर्थ है कि हमें मेशियाच और हमारे परिवार के बीच चयन करना पड़ सकता है। जो कोई अपने पिता वा माता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; जो कोई अपने बेटे वा बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और व्यक्तिगत विश्वासी को शिष्यत्व के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता बनानी चाहिए। यीशु ने कहा: जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरे योग्य नहीं। हमें उसकी अस्वीकृति के साथ स्वयं को पूरी तरह से पहचानना चाहिए। जो कोई अपना प्राण पाएगा वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वह उसे पाएगा (मत्ती १०:३७-३९)। हमें मसीहा में अपना जीवन खोना है।

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 10

ईमान लाने वालों के लिए इनाम होगा। सेंचुरियन की तरह (देखें Ea– सेंचुरियन का विश्वास) जो लोग प्रेरितों को प्राप्त करते हैं उन्हें यीशु को प्राप्त करने के रूप में देखा जाता है। वह इस शिक्षण को इस सामान्य सिद्धांत के साथ समाप्त करते हैं कि जो कोई आपका स्वागत करता है वह मेरा स्वागत करता है, और जो कोई मेरा स्वागत करता है वह उसका स्वागत करता है जिसने मुझे भेजा है। जो कोई भविष्यद्वक्ता का स्वागत भविष्यद्वक्ता के रूप में करता है, उसे भविष्यवक्ता का प्रतिफल मिलेगा, और जो कोई किसी धर्मी व्यक्ति का स्वागत धर्मी व्यक्ति के रूप में करता है, वह धर्मी व्यक्ति का प्रतिफल प्राप्त करेगा। यहां तक कि सबसे छोटे कार्य को भी पुरस्कृत किया जाएगा। और यदि कोई इन छोटों में से किसी एक को जो मेरा चेला है एक कटोरा ठंडा जल भी दे, तो मैं तुम से सच कहता हूं, वह अपना प्रतिफल न खोएगा (मत्ती १०:४०-४२)।

तब अंततः पूर्ति का एहसास हुआ और वे बाहर गए और जो कुछ उन्होंने सीखा था उसे लागू किया। जब यीशु ने बारह प्रेरितों को निर्देश देना समाप्त कर लिया, तो वह वहाँ से गलील के नगरों में उपदेश देने और सुसमाचार का प्रचार करने के लिए चला गया। लूका ने प्रचार के लिए जिस शब्द का इस्तेमाल किया वह यूएगेलिज़ोमाई है, या शुभ समाचार की घोषणा करने के लिए। और प्रेरितों ने भी बाहर जाकर उपदेश दिया कि लोगों को पश्चाताप करना चाहिए, या घूमना चाहिए और एक अलग दिशा में जाना चाहिए, या किसी के पिछले पापपूर्ण जीवन के बारे में मन में बदलाव करना चाहिए और उससे छुटकारा पाने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए। यह उपदेश पापी के लिए शुभ समाचार नहीं होगा, जब तक कि इसके साथ यहोवा द्वारा प्रदान की गई मुक्ति की घोषणा न हो। इसलिए जिन लोगों ने यीशु के बारे में अपना मन बदल लिया, उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ और वे उस दिन यहूदियों के विश्वासी अवशेष का हिस्सा बन गए। उन्होंने अपने अधिकार की पुष्टि के रूप में कई राक्षसों को बाहर निकाला, बीमार लोगों का तेल से अभिषेक किया और हर जगह लोगों को चंगा किया (मत्ती ११:१; मरकुस ६:१२-१३; लूका ९:६)।

हालाँकि यह महंगा हो सकता है, राजा मसीहा के प्रतिबद्ध शिष्यों के अलावा हमारे जीवन का निवेश करने का कोई बेहतर तरीका नहीं है! क्या हम अभी और आने वाले विश्व में ईश्वर का आशीर्वाद पाने के लिए अपने महान रब्बी के संदेश पर ध्यान दे सकते हैं।

मसीह के शिष्य को उनमें नए जीवन की घोषणा करने के लिए बुलाया गया है – शब्द और कर्म दोनों से गवाही देने के लिए, कि येशुआ ने पाप पर विजय प्राप्त की है और ईश्वर के राज्य का उद्घाटन किया है। जैसे ही उन्होंने इस आह्वान को समझाया, यीशु ने अपने प्रेरितों को यह भी चेतावनी दी कि जिस नए जीवन को वे प्रकट करने वाले थे वह उनकी अपनी शर्तों पर जीवन से मौलिक रूप से भिन्न था। मसीहा ने जिस विभाजन की बात की थी वह तब घटित होता है जब हमारे भीतर की रोशनी तेज हो जाती है, हमारे चारों ओर का अंधेरा पूरी तरह से उजागर हो जाता है।

Fk – यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा मत्ती ९:३५ से ११:१;
मरकुस ६:६बी-१३; लूका ९:१-६ | 11

अगर हम चाहते हैं कि येशुआ हा-मेशियाच की रोशनी चमके, तो अंधेरे को रास्ता देना होगा – और यह कभी-कभी दर्दनाक हो सकता है। फिर भी, यह एक शिष्य का आह्वान है कि वह प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखे, और मसीह के वचन को दोधारी तलवार की तरह अंधकार को प्रकाश से अलग करने दे। साथ ही, यीशु अपने शिष्यों को अपने प्रेम की सांत्वना के बिना कभी नहीं छोड़ते। हमें यह जानकर सांत्वना मिलती है कि जैसे हम उसके क्रूस में भाग लेते हैं, हम उसके पुनरुत्थान में भी भाग लेते हैं – अभी भी और युग के अंत में भी। जर्मन लूथरन पादरी डायट्रिच बोनहोफ़र, जिन्हें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी में नाजी शासन द्वारा कैद और मौत की सजा दी गई थी क्योंकि उन्होंने इसकी नीतियों का विरोध किया था, इसे इस तरह से रखें:

अंतिम निर्णय तब लिया जाना चाहिए जब हम अभी भी पृथ्वी पर हैं। यीशु की शांति क्रूस है. परन्तु क्रूस वह तलवार है जिसे परमेश्वर पृथ्वी पर चलाता है। यह विभाजन पैदा करता है. एक बेटा अपने पिता के खिलाफ, एक बेटी अपनी मां के खिलाफ। मनुष्य के शत्रु उसके अपने ही घर के सदस्य होंगे – यह सब परमेश्वर के राज्य और उसकी शांति के नाम पर होगा। यही वह कार्य है जो मसीह पृथ्वी पर करता है।

परमेश्वर का प्रेम मनुष्य के अपने मांस और रक्त के प्रति प्रेम से बिल्कुल अलग है। मानव जाति के प्रति उनके प्रेम का अर्थ है क्रूस। परन्तु वह क्रूस और वह मार्ग दोनों ही जीवन और पुनरुत्थान हैं। जो कोई अपना प्राण खोएगा वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वह उसे पाएगा।

प्रभु, आपने मुझे आराम और आराम के जीवन के लिए नहीं बुलाया है। आपने मुझे विश्वास और आज्ञाकारिता के जीवन के लिए बुलाया है। मुझे आप में विकसित होने में मदद करें। और मुझे इस आम लेकिन मूर्खतापूर्ण धारणा का विरोध करने में मदद करें कि आपका अनुसरण करना कठिन के अलावा कुछ भी होगा।